

अर्थव्यवस्था की सहायक अवसंरचनायें

1. सामाजिक अवसंरचना – शिक्षा व स्वास्थ्य
2. आर्थिक अवसंरचना – परिवहन व संचार
3. आर्थिक अवसंरचना – विद्युत, सिंचाई व बैंकिंग

## अध्याय 8

### सामाजिक अवसंरचनायें – शिक्षा व स्वास्थ्य

#### (अ) शिक्षा

**महत्त्व** – “स्वतन्त्रता, सामाजिक न्याय व समान अवसरों के मूल्य पर आधारित सामाजिक अवस्था स्थापित करने व तेजी से आर्थिक विकास करने के लिए शिक्षा एकमात्र सबसे अधिक महत्वपूर्ण अवसंरचना है।”

#### रियासतों के समय की स्थिति

हिमाचल प्रदेश के गठन से पूर्व रियासतों के समय सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से हिमाचलीय क्षेत्र अत्यन्त दयनीत अवस्था में थे। शिक्षण संस्थाओं की अत्यधिक न्यूनता थी। रियासतों के मुख्यालयों पर ही गिनी-चुनी पाठशालायें थीं। जन-साधारण आर्थिक व सामाजिक कारणों से वहां अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने नहीं भेज सकते थे। उच्च शिक्षा केवल अधिकृत परिवारों के व्यक्तियों तक ही सीमित थी। स्त्री वर्ग की दशा और भी अधिक दयनीय थी। राजघरानों तक की महिलाओं को शिक्षा प्रदान नहीं की जाती थी।

#### हिमाचल के गठन के बाद की स्थिति

15 अप्रैल, 1948 को हिमाचल प्रदेश का गठन हुआ। नव-गठित राज्य के समक्ष दो प्रमुख लक्ष्य थे— स्वतन्त्रता, सामाजिक न्याय व समान अवसरों पर आधारित सामाजिक व्यवस्था स्थापित करना, तेजी से आर्थिक विकास करना।

इन दोनों लक्ष्यों को प्राप्त करने का एकमात्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन शिक्षा है। इस तथ्य को हिमाचल प्रदेश की तत्कालीन सरकार ने समझा और शिक्षा के विकास को उच्च प्राथमिकता दी।

सन् 1948 में राज्य में केवल 243 प्राथमिक 52 माध्यमिक व 10 उच्च विद्यालय थे। साक्षरता की दर लगभग 7 प्रतिशत थी। नियोजित-विकास के अनथक प्रयासों द्वारा गत वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक प्रसार व विस्तार हुआ है। सन् 1991 की जनगणना के अस्थाई आंकड़ों के अनुसार राज्य में साक्षरता 64 प्रतिशत हो गई है। इस समय लगभग 75 प्रतिशत पुरुष व 52 प्रतिशत महिलाएं साक्षर हैं। परन्तु अभी तक हम शत-प्रतिशत साक्षरता के लक्ष्य के पीछे हैं। महिलाओं की लगभग आधी संख्या अभी भी अशिक्षित व निरक्षर है। सर्वप्रथम शत-प्रतिशत साक्षरता के लिए हमीरपुर जिले को चुना गया है। सन् 2000 के अन्त तक हम सम्पूर्ण राज्य को पूर्ण साक्षर बनाने का सपना पूरा करना चाहते हैं।

इसके लिए प्राथमिक शिक्षा सुलभ कराने के लिए प्राथमिक विद्यालयों का प्रसार किया गया है। लक्ष्य रखा गया है कि बच्चों को प्रायः एक कि०मी० से अधिक पैदल न चलना पड़े। प्रोढ़ों के लिए प्रोढ़ शिक्षा केन्द्र खोले गये हैं।

## शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट कार्यक्रम

1. **व्यावसायिक शिक्षा** : वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा का प्रावधान किया गया है। इनमें उद्यान, लेखा परीक्षण, घरेलू विद्युत उपकरणों की मरम्मत, कम्प्यूटर तकनीकी व इलेक्ट्रॉनिक तकनीकी सम्बन्धी कार्यक्रम 25 वरिष्ठ विद्यालयों में शुरू किए गए हैं। वर्ष 1992-93 में 25 अन्य विद्यालयों में भी इसका विस्तार किया गया।

2. **औद्योगिक प्रशिक्षण** : औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आई.टी.आई.) में अभियान्त्रिकी व अभियान्त्रिकी स्तर (इंजीनियरी व नान इंजीनियरी) विषयों में 2 वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम पढ़ाने का कार्य चल रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए भी विशेष प्रावधान किया गया है। राज्य में 17 संस्थागत कार्यरत हैं।

3. **तकनीकी शिक्षा** : तंत्र निकेतन या बहुतकनीकी संस्थाओं (पौलीटेकनिक इंस्टीच्यूट) में तीन वर्षीय सिविल (इंजीनियरी, मैकेनिकल, इलेक्ट्रीकल, आटोमोबाइस, वास्तुकला इंजीनियरिंग तथा इलेक्ट्रॉनिक्स व कम्प्यूनिवेशन पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण दिया जाता है। ये संस्थागत हमीरपुर, सुन्दरनगर, कण्डाघाट व रोहडू में स्थित हैं।

स्थानक स्तर पर अभियान्त्रिकी (इंजीनियरिंग) का पाठ्यक्रम क्षेत्रीय अभियान्त्रिकी महाविद्यालय हमीरपुर में चल रहा है।

4. **कृषि** : स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर पर कृषि के क्षेत्र में शिक्षा प्रदान करने के लिए पालमपुर में हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय कार्यरत है।

5. **उद्यानिकी व वानिकी** : उद्यानिकी व वानिकी की शिक्षा के लिए सोलन में डा. यशवंत सिंह परमार विश्वविद्यालय कार्य कर रहा है। नींबू प्रजाति के फलों के विकास व खोज कार्य के लिए इनका एक परिसर नूरपुर के समीप जाछ में कार्य कर रहा है।

6. **चिकित्सा** : चिकित्सा के क्षेत्र में एलोपैथी प्रणाली की शिक्षा इन्दिरा गांधी मैडीकल कालेज शिमला में प्रदान की जाती है। यहां एम.बी.बी.एस. की उपाधि प्रदान की जाती है। अब स्नातकोत्तर स्तर पर भी प्रशिक्षण व पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। आयुर्वेदिक प्रणाली पर पपरोला में बी.एम.एम.एस. की उपाधि प्रदान करने वाला महाविद्यालय काम कर रहा है।

7. **सामान्य शिक्षा के लिए हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला में स्थित है। इसके अधीन बहुत से महाविद्यालय दिन की एवं सांध्यकालीन कक्षाएं चलाते हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय स्तर का ही एक संस्थान इण्डियन इंस्टीच्यूट आफ एडवांस स्टडीज़ भी शिमला में स्थित है। हि.प्र. विश्वविद्यालय का एक क्षेत्रीय केन्द्र धर्मशाला में शुरू किया गया है। जहां स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं।**

8. **विद्यालय स्तर की शिक्षा** : राज्य भर में विद्यालय स्तर की शिक्षा प्रदान करने के लिए प्राथमिक, माध्यमिक उच्च व वरिष्ठ माध्यमिक पाठशालाओं का जाल-सा बिछा हुआ है। वर्ष 1990-91 तक 7547 प्राथमिक 2033 माध्यमिक, 1020 उच्च व 160 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कार्य कर रहे थे। इनमें विज्ञान, मानविकीय, वाणिज्य जैसे विषयों की शिक्षा दी जाती है। राज्य में केन्द्रीय प्रणाली पर 10 + 2 प्रणाली लागू है व राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसन्धान परिषद् का पाठ्यक्रम लागू है। प्राथमिक शिक्षा का अलग निदेशालय है। परीक्षा लेने के लिए हिमाचल प्रदेश शिक्षा बोर्ड धर्मशाला में स्थित है।

## स्वास्थ्य सेवाएं

बीमारियां गरीबों को तबाह कर देती हैं। उनका उत्पादकीय श्रम व्यर्थ में नष्ट हो जाता है। कमजोरी से कार्य कुशलता व उत्पादकता कम हो जाती है। देखभाल व परिचर्या करने वालों का श्रम भी अनुत्पादकीय हो जाता है। हिमाचल में आवागमन के साधन सुलभ न होने से मरीजों को डाक्टर या अस्पताल तक पहुंचा पाना भी कठिन हो जाता है। कई बार 4-6 व्यक्ति मरीज को चारपाई पर उठाकर लम्बी दूरी तय कर डाक्टर के पास पहुंचाते हैं। इन बातों को ध्यान में रखते हुए हिमाचल प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं के कार्यक्रम का उद्देश्य एक तरफ तो गांवों तक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार करना है। ताकि छोटी मोटी बीमारी का उपचार वहीं हो जाये, साथ ही थोड़ी-थोड़ी दूरी पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, उपमण्डल स्तर पर नागरिक अस्पताल उपलब्ध कराना है ताकि गरीब ग्रामीण को समीप ही चिकित्सा सुविधा प्राप्त हो सके। वहीं दूसरी ओर निरोधक उपायों को अपनाकर बीमारियों को होने से पहले ही एक रोक देना है।

बहुत-सी बीमारियां दूषित पानी व गन्दे पर्यावरण के कारण होती हैं, कुछ महामारियों के कारण। जच्चा-बच्चा की उचित देखभाल न होने से भी वे न केवल रोगग्रस्त होते हैं, वरन् असमय ही मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। इन सभी बातों को ध्यान से रखते हुए राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं का नियोजन किया गया है। इनके निम्न उद्देश्य हैं :

- (i) राज्य में पर्यावरण, स्वच्छता व सफाई अभियान
- (ii) छूत की बीमारियों की रोकथाम।
- (iii) स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी से जनता को परिचित कराना।
- (iv) परिवार कल्याण कार्यक्रम।
- (v) जच्चा-बच्चा देखभाल।
- (vi) स्वास्थ्य सेवाओं में विस्तार।

इन उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु राज्य में सरकार द्वारा चलाये गये कार्यक्रम का वर्णन साधक होगा।

**स्वास्थ्य सेवाओं का प्रसार :** 15 अप्रैल, 1948 को रियासतों का विलय कर हिमाचल प्रदेश का गठन किया गया था। तब राज्य में केवल 85 डाक्टर-वैद्य, 91 स्वास्थ्य संस्थाएं व 455 बिस्तरों का ही प्रबन्ध था। नियोजित विकास के अन्तर्गत चार पंचवर्षीय योजनाओं में इनका, काफी प्रसार किया गया परन्तु गति धीमी रही। अतः पांचवीं योजना में सन् 2000 तक "न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम" (Minimum need programme) के अन्तर्गत स्वास्थ्य सेवाओं के लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित किये गये, जैसे :

- (i) 1990 तक प्रति 1000 आबादी पर एक सामुदायिक स्वास्थ्य स्वयं सेवक की नियुक्ति करना।
- (ii) सन् 2000 तक (a) 3000 की आबादी पर एक सहायक केन्द्र स्थापित करना।
- (b) 20,000 की आबादी पर एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलना।
- (c) ब्लॉक स्तर पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चालू करना।

उपर्युक्त लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए प्रति वर्ष स्वास्थ्य सेवाओं में विस्तार किया जा रहा है। मार्च, 1991 तक राज्य में 39 सिविल अस्पताल, 193 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सहित 461 चिकित्सा संस्थाएँ एवं 1851 उप केन्द्र व 46 मातृ एवं शिशु केन्द्र कार्य कर रहे थे।

स्वास्थ्य सम्बन्धी अवसंरचनाओं के अधीन निम्न परियोजनाओं पर कार्य हो रहा है।

(1) **ग्रामीण स्वास्थ्य योजना** : इसके अन्तर्गत स्वास्थ्य मार्गदर्शक लोगों को प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधा प्रदान कर रहे हैं। वे मलेरिया निरीक्षण, परिवार कल्याण व प्रतिरक्षण की गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

(2) **राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम** : इसके अन्तर्गत राज्य में हजारों जगह बुखार इलाज डिपो, औषधि वितरण केन्द्र, मलेरिया उपचारालय कार्य कर रहे हैं। मार्च, 1990 में इनकी संख्या 8912 थी।

(3) **कुष्ठ नियन्त्रण कार्यक्रम** : यह कार्यक्रम 6 कुष्ठ चिकित्सालयों, क्लीनिकों व उपचार केन्द्रों द्वारा चलाया जा रहा है। 492 बिस्तरों का प्रावधान मार्च, 1992 तक था।

(4) **राष्ट्रीय क्षय रोग नियन्त्रण कार्यक्रम** : राज्य में 2 क्षय रोग चिकित्सालय 11 जिला क्षय रोग क्लीनिक और 6 क्षय रोग उप-क्लीनिक कार्य कर रहे हैं। 713 बिस्तरों का प्रावधान है।

(5) **बी.सी.जी. कार्यक्रम** : एक लाख से अधिक बच्चों को प्रति वर्ष बी.सी.जी. के टीके लगाये जा रहे हैं।

(6) **अन्धेपन से बचाने का राष्ट्रीय कार्यक्रम** : इसके अन्तर्गत हजारों लोगों के मोतिया बिन्द के शल्य चिकित्सा (आप्रेसन) प्रति वर्ष किए जा रहे हैं।

(7) **मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य प्रतिरक्षण कार्यक्रम** : इस कार्यक्रम को 10 जिलों में चलाया जा रहा है एवं 1000 प्रतिशत महिलाओं को टी.टी. व 85 प्रतिशत छोटे बच्चों को डी.पी.टी. पोलियो, बी.सी.जी. व खसरा के टीके लगाये जा रहे हैं।

(8) **स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम** : इसके अन्तर्गत स्कूलों में बच्चों के स्वास्थ्य की जांच की जाती है तथा उन्हें टाइफाइड व टी.टी. के टीके लगाये जाते हैं।

(9) **राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम** : परिवारों का आकार छोटा रखने व जन्म दर को कम करने के उद्देश्य से सरकार राज्य में बन्धनकरण, लूप निवेश तथा अन्य उपायों को प्रोत्साहित करती है एवं इन्हें स्वीकार करने वालों को कई मामलों में आर्थिक सहायता भी देती है।

(10) **अस्पतालों का दर्जा बढ़ाना** : उपमण्डल स्तर पर बड़े अस्पतालों का निर्माण किया जा रहा है जहां अधिक बिस्तरों के प्रावधान के साथ दन्त चिकित्सा, एक्सरे, शल्य चिकित्सा, आंखों का इलाज जैसे मामलों में स्वास्थ्य सेवाओं का प्रसार किया गया है। धर्मशाला में क्षेत्रीय स्तर का अस्पताल बनाया जा रहा है। जहां दिल की बीमारी जैसी बीमारियों के इलाज की भी सुविधा प्रदान की जायेगी। इन्दिरा गांधी मैडीकल कालेज में स्नातकोत्तर कक्षाओं का प्रबन्ध हो रहा है।

उन सभी प्रयासों के फलस्वरूप राज्य में लोग अब बीमारी का इलाज करते हैं। अन्ध-विश्वासों से ऊपर उठ रहे हैं। मृत्यु दर काफी कम हुई है तथा मातृ व शिशुओं की असामायिक मृत्यु में भी काफी कमी आई है। महिलाओं में यौन सम्बन्धी बीमारियों पर काफी सीमा तक काबू पा लिया गया है इन सभी प्रयासों से राज्य के लोगों के स्वास्थ्य में सुधार हुआ है तथा वे पैदावार बढ़ाने में सहायक हो रहे हैं।

## **अभ्यास-प्रश्न**

### **(अ) निबन्धात्मक प्रश्न**

- (1) शिक्षा के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट कार्यक्रमों का उल्लेख करो।

- (2) स्वास्थ्य के लिए सरकार द्वारा चलाये गये कार्यक्रम को स्पष्ट करो।
- (3) बीमारी अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित करती है ? स्वास्थ्य सेवा के उद्देश्यों का वर्णन करो।
- (4) हिमाचल प्रदेश के गठन से पूर्व शिक्षा की क्या स्थिति थी ? अब साक्षरता कहां तक पहुंची है ? स्पष्ट करो।

### (ब) लघु उत्तर प्रश्न

- (1) सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा पर एक नोट लिखो।
- (2) राज्य में तकनीकी शिक्षा के लिए क्या प्रयास किये गये हैं ? स्पष्ट करो।
- (3) स्वास्थ्य सम्बन्धी किन्हीं चार परियोजनाओं का उल्लेख कीजिए।
- (4) हिमाचल में स्वास्थ्य सेवाओं का प्रसार संक्षेप में समझाइये।

### (स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थान भरो—

- (i) पुरुषों में साक्षरता ..... प्रतिशत हो गई है।
- (ii) पालमपुर में ..... विश्वविद्यालय है।
- (iii) बागवानी व वानिकी विश्वविद्यालय ..... में है।
- (iv) राज्य का अभियान्त्रिकी कालेज ..... में है।
- (v) मैडीकल कालेज ..... में है।

सही (✓) व गलत (×) के चिन्ह लगाइये

- (i) बड़ी आयु के लोगों के लिए प्रोढ़ शिक्षा की व्यवस्था नहीं है।
- (ii) सेवारत अध्यापकों को नवीनतम जानकारी से परिचित किया जा रहा है।
- (iii) हिमाचल प्रदेश में संस्कृत भाषा को महत्त्व दिया जा रहा है।
- (iv) स्वास्थ्य के क्षेत्र में बीमारियों के निरोधात्मक उपाय नहीं अपनाये जा रहे।
- (v) दूषित जल बीमारियों की जड़ है।

